संयुक्तांक

वर्ष 33, अंक 2 — जुलाई–दिसम्बर, 2019
वर्ष 34, अंक 1 — जनवरी–जून, 2020

उन्मीलन

मानसिक हिन्दस्वराज का वैतालिक
दार्शनिक षाण्मासिक

प्रधान-सम्पादक
यशदेव शल्य
मुकुन्द लाठ

सम्पादक
अम्बिकादत्त शर्मा
प्रदीप कुमार खरे

दर्शन प्रतिष्ठान
जयपुर

सम्पादकीय

कोरोना संकट की आड़ में साभ्यतिक बदलाव की आहट

अम्बिकादत्त शर्मा, प्रदीप कुमार खरे

आज समूची दुनिया कोविड–19 नामक महामारी की चपेट में है। महामारियाँ तो पहले भी आती रही हैं और मनुष्य अपना बचाव करने में सफल भी होता रहा है। आशा है, इस बार भी कोरोना हारेगा और मनुष्य की जीत होगी। परन्तु हारा हुआ कोरोना इस बार जाते–जाते इतना तो जरूर कहता जायेगा कि मैं आधुनिक सभ्यता का वायरस हूँ और मेरे फलने–फैलने की बेशुमार सुचालकता उसकी रगों में है। अब यह मानव–जाति के विवेक पर निर्भर करता है कि वह आधुनिक सभ्यता के व्यामोह से निजात पाने का विकल्प ढूँढ़ेगा या फिर उसी के एक आभासी आयाम (वर्चुअल डायमेन्सन) को विकसित कर लेगा जो मेरी संक्रामक शक्ति की पकड़ से बाहर हो।

कोरोना वायरस की यह चेतावनी काल्पनिक ही सही लेकिन जायज है, क्योंकि इससे फैली यह महामारी वैसी नहीं जैसी कि पहले की महामारियाँ होती थीं। यह कई मायने में बिलकुल अलग प्रकार की है। इससे पहले की महामारियों को निरपवाद रूप से प्राकृतिक अशुभ (नेचुरल इविल) माना जाता था, लेकिन इसके पीछे ऐसी आशंका जतायी जा रही है कि यह नैतिक अशुभ (मोरल इविल) है। सम्भव है कि यह किसी दुष्ट मानवीय चेष्टा की सोची–समझी कारगुजारी हो। पहले की महामारियाँ तीव्र गति से मनुष्य को मृत्यु के कराल गाल में झोंक देती थीं और उनके फैलने की गति धीमी होती थी। परन्तु कोरोना वायरस मनुष्य को धीरे–धीरे मारता है और इसके फैलने की रफ्तार बहुत तेज है। यह जबकि वायुमण्डल पर सवार होकर बहुत दूर की यात्रा करने में सक्षम नहीं। पहले की महामारियाँ

संयुक्तांक : उन्मीलन - वर्ष 33, अंक 2 एवं वर्ष 34, अंक 1, जुलाई 2019-जून 2020
ISSN-0974-0053
U.G.C. Care List : Arts & Humanities, SI.No. 310